

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता, सत्र 13, पॉल में मसीह के साथ एकता के लिए आधार, 1 और 2 कुरिन्थियों

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र संख्या 13 है, पॉल में मसीह के साथ एकता के लिए आधार, 1 और 2 कुरिन्थियों।

जैसा कि हम पॉल में मसीह के साथ एकता पर अपने अध्ययन को जारी रखते हैं, आइए हम प्रभु की सहायता लें।

पिता, आपके पवित्र वचन के लिए धन्यवाद। हमें अपनी पवित्र आत्मा देने और हमें अपना संत बनाने के लिए धन्यवाद। हमारी आँखें खोलो ताकि हम आपके वचन में अद्भुत चीजें देख सकें। हमें प्रोत्साहित करो, हमें अनंत मार्ग पर ले चलो, हम मध्यस्थ यीशु मसीह के माध्यम से प्रार्थना करते हैं। आमीन।

हम पॉलिन के अंशों का अध्ययन कर रहे हैं जिसमें वह मसीह के साथ एकता सिखाता है।

हम बहुत ही चयनात्मक हो रहे हैं क्योंकि मसीह के साथ एकता पौलुस के पत्रों में व्याप्त है। जैसा कि हम बाद में देखेंगे, जब हम उसके कुछ विषयों और विचारों का सारांश देते हैं, तो यह पत्रों के अभिवादन और समापन में आकस्मिक संदर्भों में हो सकता है। उनमें से आधे में मसीह के साथ एकता का संदर्भ है।

यह बस उनकी शब्दावली का हिस्सा बन गया। किसी का नाम और फिर मसीह में, उदाहरण के लिए, टिमोथी, और मसीह में कभी-कभी ईसाई के लिए एक पर्यायवाची है। मसीह में ईसाई के लिए एक पर्यायवाची है।

मसीह की भाषा में हमेशा मसीह के साथ रिश्ते का एक बुनियादी आधार होता है, लेकिन कई अन्य बारीकियाँ, एक अच्छा शब्द है, जिसका अध्ययन किया गया है और उसे प्रकाश में लाया गया है। मसीह की भाषा में कई अन्य बारीकियाँ उस आधार के ऊपर हैं, अगर हम इस तरह से बात कर सकते हैं। बेशक, उसमें, मसीह में, यह हमेशा मसीह के साथ एकता की बात नहीं करता है, लेकिन ज्यादातर समय, यह करता है।

1 कुरिन्थियों 10 में पौलुस प्रभु भोज के विषय में शिक्षा देता है, और इन आयतों को 1 कुरिन्थियों 11 में प्रभु भोज की प्रसिद्ध संस्था के प्रकाश में लेने से कहीं अधिक ध्यान में लिया जाना चाहिए। यह एक महत्वपूर्ण अंश है, लेकिन पौलुस चाहता है कि हम इसे अध्याय 10 में उसके पिछले शब्दों के प्रकाश में पढ़ें। 1 कुरिन्थियों 10:16-22.

जिस आशीर्वाद के प्याले को हम आशीर्वाद देते हैं, क्या वह मसीह के लहू में सहभागिता नहीं है? ध्यान दें कि पौलुस क्रम को उलट देता है; रोटी और प्याले के बजाय, वह पहले प्याले का उल्लेख करता है। क्या वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, मसीह की देह में सहभागिता नहीं है? 1 कुरिन्थियों 10:17. क्योंकि एक ही रोटी है, इसलिए हम जो बहुत हैं, एक देह हैं, क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में सहभागी होते हैं।

इस्राएल के लोगों पर विचार करें, क्या वे लोग जो बलि खाते हैं, वे वेदी पर भागीदार नहीं हैं? तो फिर, मेरा क्या मतलब है कि मूर्तियों को चढ़ाया गया भोजन कुछ है या मूर्ति कुछ है? नहीं, मेरा मतलब है कि जो मूर्तिपूजक बलि चढ़ाते हैं, वे राक्षसों को चढ़ाते हैं, न कि भगवान को। मैं नहीं चाहता कि तुम राक्षसों के भागीदार बनो। तुम प्रभु का प्याला और राक्षसों का प्याला दोनों नहीं पी सकते।

आप प्रभु की मेज़ और दुष्टात्माओं की मेज़ दोनों में से किसी एक का हिस्सा नहीं बन सकते। क्या हम प्रभु को ईर्ष्यालु बना दें? क्या हम उससे ज़्यादा शक्तिशाली हैं? कड़े शब्द। बड़े और संकीर्ण संदर्भों में, पौलुस कुरिन्थियन चर्च, खास तौर पर चर्च के पुरुषों को, अनजाने में मूर्तिपूजक उपासना में भाग लेने से रोकना चाहता है।

उनमें से कुछ लोग मूर्खतापूर्वक सोचते हैं कि वे मूर्ति मंदिरों में बिना किसी दंड के भोजन कर सकते हैं। उनका दावा है कि इस तरह के व्यवहार का ईसाई जीवन पर कोई असर नहीं पड़ता। उनका तर्क यह लगता है कि चूँकि मूर्तियों की कोई वास्तविकता नहीं है, इसलिए उनके लिए बलि चढ़ाया गया भोजन खाना हानिरहित है।

हालाँकि पॉल इस बात से सहमत है कि मूर्तियों की कोई वास्तविकता नहीं है, लेकिन वह उनके तर्क को अस्वीकार करता है। इसके विपरीत, विश्वासियों को मूर्तियों या उनके मंदिरों से कोई लेना-देना नहीं होना चाहिए। क्यों? क्योंकि, उद्धरण, जो मूर्तिपूजक बलिदान करते हैं, वे राक्षसों को चढ़ाते हैं, न कि भगवान को।

मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के भागीदार बनो, इस अंश में मुख्य शब्द यही है। उद्धरण समाप्त, पद 20. अलौकिक क्षेत्र, अर्थात् अलौकिक बुराई के साथ-साथ अलौकिक अच्छाई और ईश्वर के साथ भागीदारी की यह धारणा, पद 18 में पुराने नियम के बलिदानों के बारे में पौलुस के संदर्भों द्वारा पुष्ट होती है।

तो, यहाँ विचार का प्रवाह है। दो बार कहने के बाद, जो विश्वासी प्रभु के भोज में विश्वास के साथ भाग लेते हैं, वे पाते हैं कि यह मसीह के रक्त और शरीर में भागीदारी है, श्लोक 16, फिर से, तत्वों को उलटना।

फिर, वह मूर्तिपूजक पूजा में शामिल राक्षसों के साथ भागीदारी के बारे में बात करता है। और फिर, एक और दृष्टान्त, इस बार पुराने नियम से, परमेश्वर द्वारा निर्धारित बलिदानों में भागीदारी, श्लोक 18। एक अलंकारिक प्रश्न के साथ, पौलुस अपने समय की यहूदी पूजा प्रथाओं की ओर इशारा करता है जो पुराने नियम की शिक्षाओं पर आधारित थीं।

बलिदान में चढ़ाए गए भोजन में हिस्सा लेने का मतलब था बलिदान के धार्मिक कार्य में हिस्सा लेना, यानी इस्राएल के परमेश्वर की आराधना में हिस्सा लेना। इसका मतलब था वेदी के लाभों में विश्वास में हिस्सा लेना, श्लोक 18। इस्राएल के लोगों पर विचार करें।

क्या बलिदान खाने वाले वेदी में भागीदार नहीं हैं? इस प्रकार, तात्कालिक संदर्भ में, पौलुस बुतपरस्त धार्मिक भोजन में राक्षसों के साथ भाग लेने और यहूदी बलिदानों में इस्राएल के परमेश्वर के साथ भाग लेने की बात करता है। जोर भाग लेने के अलौकिक प्रभावों पर है। कोइनोनिया शब्द का इस्तेमाल पद 16 में दो बार किया गया है, मसीह के रक्त में कोइनोनिया, और मसीह के शरीर में कोइनोनिया का अर्थ है भागीदारी और साझा करना।

इसका बहुत बढ़िया अनुवाद होगा कम्यूनियन। हम इस शब्द का इस्तेमाल, बेशक, प्रभु के भोजन के लिए करते हैं, अगर हम यह समझ लें कि भोजन का सबसे गहरा अर्थ, एक का आलिंगन जो सभी को शामिल करता है, वास्तव में, मसीह के साथ कम्यूनियन या मिलन है। इसलिए, जब पॉल प्रभु के भोजन में भाग लेने वाले ईसाइयों की बात करता है, तो उसका मतलब है कि ऐसा करने से, वे भाग लेते हैं, वे संवाद करते हैं, और वे मसीह के शरीर और रक्त में हिस्सा लेते हैं।

अर्थात्, वे क्रूस पर मसीह के एक बार के बलिदान के लाभों में भाग लेते हैं। श्लोक 16, आशीर्वाद का प्याला जिसे हम आशीर्वाद देते हैं, क्या यह मसीह के लहू में भागीदारी नहीं है? क्या हम जो रोटी तोड़ते हैं वह मसीह के शरीर में भागीदारी नहीं है? आलंकारिक प्रश्न हैं, और इस्तेमाल किया गया ग्रीक नकारात्मक कण सकारात्मक उत्तर को इंगित करता है। अर्थात्, यह है, है न? यह है, है न? चंपा और रोस्टर समझदार हैं।

"एक अलंकारिक प्रश्न की सहायता से, प्रेरित सिखाता है कि प्रभु के भोजन में भाग लेने वाले विश्वासी लोग परमेश्वर के साथ सच्ची संगति का आनंद लेते हैं और उस जीवन में भागीदारी करते हैं जिसे उसने क्रूस के माध्यम से हमारे लिए जीता है।" 1 कुरिन्थियों पर उनकी शानदार टिप्पणी। मुझे कहना होगा कि मेरे पास टिप्पणियों का एक अच्छा चयन है, और वे मेरी पसंदीदा हैं।

वे निष्पक्ष हैं, वे कई तरह के विचार देते हैं, वे बहुत ज्यादा हठधर्मी नहीं हैं, और हाँ, उन्होंने 1 कुरिन्थियों के बड़े और छोटे संदर्भ को अच्छी तरह से समझ लिया है। और यह सब अच्छी तरह से लिखे गए गद्य में। इस व्याख्या की पुष्टि श्लोक 21 से होती है, आप प्रभु का प्याला और राक्षसों का प्याला दोनों नहीं पी सकते।

आप प्रभु की मेज़ और दुष्टात्माओं की मेज़ दोनों में से किसी एक का हिस्सा नहीं बन सकते। पौलुस की चिंता सिर्फ दिखावे से नहीं है। अगर हम इस तरह से बात करें तो मूर्तिपूजक बलिदानों में भाग लेने वाले दुष्टात्माओं के साथ संगति करते हैं।

और मसीह के साथ भोजन में। एक बार फिर, चंपा और रोस्टर हमारी सहायता के लिए आते हैं।
उद्धरण: पॉल का तर्क, मसीह के रक्त और शरीर में भागीदारी पर जोर देने के साथ, इस बात पर जोर देने का प्रयास करता है कि भगवान कहाँ है या भगवान के छोटे जी को भोजन के मेजबान या संरक्षक या मेजबान या संरक्षक के रूप में कहाँ बुलाया जाता है।

संगति केवल मेज के चारों ओर एकत्रित पुरुषों और महिलाओं के साथ ही नहीं है, बल्कि देवता के साथ भी है। मसीह के साथ हमारी संगति के माध्यम से, हम उसके बलिदान के लाभों में भाग लेते हैं, जो परमेश्वर के साथ हमारे वाचागत संबंध को स्थापित या नवीनीकृत करने का काम करता है। क्या मैं यह सिखा रहा हूँ कि प्रभु का भोज स्वतः ही उद्धार करता है? नहीं! लेकिन यह सुसमाचार है, औपचारिक रूप से, इसलिए चर्च सुसमाचार को कभी नहीं भूलेगा।

जितनी बार आप इस रोटी को खाते हैं और इस प्याले को पीते हैं, आप प्रभु की मृत्यु, प्रायश्चित और सुसमाचार का प्रचार करते हैं जब तक कि वह न आ जाए। जैसा कि हमने कहा, इस व्याख्या की पुष्टि पद 16 के बाद आने वाली आयतों से होती है। जैसा कि रोमियों 6:1-11 और कुलुस्सियों 2:11-12 मसीह के साथ एकता को ईसाई बपतिस्मा का सबसे महत्वपूर्ण अर्थ बताते हैं, रोमियों 6:1-11, कुलुस्सियों 2:11-12, ईसाई बपतिस्मा का सबसे व्यापक, व्यापक और गहरा अर्थ मसीह के साथ एकता है।

तो यहाँ, 1 कुरिन्थियों 10 में, पौलुस सिखाता है कि प्रभु के भोज में भाग लेने वाले विश्वासी लोग मसीह के साथ एकता के लाभ प्राप्त करते हैं। वे उसके साथ सच्ची संगति का आनंद लेते हैं, और मैं उस बारे में बात नहीं कर रहा हूँ जो हम लाते हैं, हमारी भावनाएँ, जो महत्वपूर्ण हैं और पवित्र भोज में परमेश्वर के अनुग्रह की वस्तुगत वास्तविकता के प्रति व्यक्तिपरक प्रतिक्रिया हैं। मैं पवित्र भोज में परमेश्वर के अनुग्रह की वस्तुगत वास्तविकता के बारे में बात कर रहा हूँ, क्योंकि पवित्र आत्मा परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठे मसीह के लाभों को प्रभु के भोज में हमारे पास लाता है ताकि यह वास्तव में अनुग्रह का एक साधन हो।

स्वचालित? ऐसी कोई बात नहीं है। जब मैं कहता हूँ कि प्रभु के भोज में बपतिस्मा प्रत्यक्ष शब्द हैं जिन्हें सुसमाचार ने समारोह में रखा है, तो मैं उन्हें वचन से ज़्यादा महत्व नहीं दूंगा। परमेश्वर का वचन अनुग्रह का एक साधन है।

सभी इंजील ईसाई इस बात से सहमत हैं। जब सुसमाचार का प्रचार किया जाता है, तो अनुग्रह प्रदान किया जाता है। क्या यह स्वतः ही प्रभावी होता है? नहीं।

बेशक, इसे विश्वास के साथ ग्रहण किया जाना चाहिए। और प्रभु के भोज में बपतिस्मा के साथ भी ऐसा ही है। यूरोप और फ्रांस में लाखों ऐसे लोग भरे पड़े हैं, जिन्होंने रोमन कैथोलिक चर्च में शिशुओं के रूप में बपतिस्मा लिया है, लेकिन वे उद्धार नहीं पाए हैं।

रोम के तर्क के विपरीत, संस्कार काम नहीं करते, एक्स ऑपरे ऑपरेटो, केवल कार्य करने से अनुग्रह प्रदान किया जाता है। नहीं। लेकिन अनुग्रह, वास्तविक अनुग्रह, प्रदान किया जाता है।

और उस अनुग्रह के प्रति हमारी प्रतिक्रिया विश्वास होनी चाहिए, जो कि परमेश्वर का एक उपहार है, लेकिन यह एक अलग विषय है। विश्वास करने वाले प्रतिभागियों को मसीह के साथ एकता के लाभ मिलते हैं। वे मसीह के साथ सच्ची संगति का आनंद लेते हैं और उनके प्रायश्चित बलिदान के आशीर्वाद का हिस्सा बनते हैं।

और जैसा कि 1 कुरिन्थियों 10:16 में भोज में उसके साथ ऊर्ध्वाधर संगति की बात कही गई है। यह आशीर्वाद का प्याला नहीं है; यह पहली सदी के यहूदी फसह समारोह में तीसरा प्याला है, जो छुटकारे का प्याला है। यह आशीर्वाद का प्याला नहीं है, बल्कि मसीह के लहू में भागीदारी है।

यह मसीह के साथ ऊर्ध्वाधर संगति, भागीदारी और साझा करना है। अगली आयत मसीह के साथ एकता में क्षैतिज संगति की बात करती है। उसके साथ हमारा मिलन हमें एक दूसरे के साथ एकता की ओर ले जाता है, और लड़के, क्या कुरिन्थियों को शुरुआती अध्यायों और उनके विभाजनों के आधार पर यह सुनने की ज़रूरत है।

और इसीलिए तत्व उलटते हैं, वैसे, क्योंकि पॉल रोटी से प्याले तक जाने के बजाय रोटी तक जाता है और फिर जिस तरह से उन्होंने प्रभु के भोज का पालन किया, उसका उल्लेख करता है। हमें इसे ठीक उसी तरह करने की आज्ञा नहीं दी गई है जैसा उन्होंने किया था। उन्होंने एक आम रोटी या शायद रोटियों का इस्तेमाल किया, और रोटी एक विश्वासी प्रतिभागी के पास आती थी, जो एक टुकड़ा तोड़कर उसे आगे बढ़ाता था।

पौलुस ने पद 17 में उस कल्पना का उपयोग अन्य विश्वासियों के साथ क्षैतिज एकता या संगति की बात करने के लिए किया है, जो मसीह के साथ ऊर्ध्वाधर एकता पर आधारित है, जो भोज का मुख्य अर्थ है। क्योंकि एक रोटी है, हम जो बहुत हैं, एक शरीर हैं, क्योंकि हम सभी एक रोटी, आम रोटी का हिस्सा हैं, जिसे पौलुस उनकी सामान्य क्षैतिज एकता के प्रतीक के रूप में उपयोग करता है। यही कारण है कि पौलुस ने पद 16 में रोटी और प्याले को उलट दिया है, जैसा कि मैंने कहा, ताकि अगले पद में ऊर्ध्वाधर से क्षैतिज एकता में आसानी से संक्रमण हो सके।

धर्मशास्त्रीय प्रश्न यह है: यदि ईसाई बपतिस्मा मसीह के साथ आरंभिक मिलन को दर्शाता है, तो यह स्वतः ही इसे पूरा नहीं करता है, लेकिन यह उस सुसमाचार को दर्शाता है जिस पर हम विश्वास करते हैं, और हम बचाए जाते हैं, तो हमें प्रभु के भोज में मसीह के साथ निरंतर मिलन की आवश्यकता क्यों है? यह पूछने जैसा है, हमें निरंतर अनुग्रह और विश्वास की आवश्यकता क्यों है? हमें निरंतर सुसमाचार की आवश्यकता क्यों है? क्योंकि हम एक बार और हमेशा के लिए मसीह से जुड़ जाते हैं। लेकिन परमेश्वर अनुग्रह के साधनों, वचन के उपदेश और वाचन, प्रार्थना, और प्रभु के भोज में हमारी विश्वासपूर्ण भागीदारी को विश्वास को मजबूत करने के साधन के रूप में उपयोग करता है। इसलिए, कैल्विन मसीह के साथ हमारे मिलन के बंधन को मजबूत करने और हमारे बंधन को बढ़ाने के लिए प्रभु के भोज का उपयोग करने के बारे में बात करता है।

मैं एक शब्द के लिए प्रयास कर रहा हूँ, और अगर मैं समझता हूँ कि मेरा पुराना दिमाग कैसे काम करता है, तो यह बाद में आएगा। इसके अलावा, पद 17 में, पॉल चर्च की छवि को मसीह के शरीर के रूप में अपील करता है। वह इसे लगभग आकस्मिक रूप से करता है।

वह इसे बिल्कुल भी स्पष्ट नहीं करता। यह सिर्फ ईसाई शब्दावली का हिस्सा है। क्योंकि एक रोटी है, हम जो एक शरीर हैं, हम जो बहुत हैं, एक शरीर हैं, क्योंकि हम सब एक रोटी खाते हैं।

जब कोरिंथियन मण्डली के कई सदस्य प्रभु के भोज में एक आम रोटी खाते हैं, तो वे एक शरीर बन जाते हैं। रोटी खाने से कई लोग मसीह के एक शरीर, एक कलीसिया बन जाते हैं। भोज में अनुभव किया गया मसीह के साथ उनका मिलन, मसीह के शरीर के रूप में एक दूसरे के साथ उनके मिलन को स्थापित और प्रदर्शित करता है।

1 कुरिन्थियों 15:21-23. हम संभवतः हर पौलीन पाठ की जांच नहीं कर सकते। मसीह के साथ एकता पर, मैं कुछ बेहतरीन चुन रहा हूँ, और मैं बस इतना ही कहूँगा।

मैं उनमें से किसी के खिलाफ नहीं बोलूँगा, बेशक। पौलुस दो मनुष्यों की तुलना और विरोधाभास करता है। 1 कुरिन्थियों 15:21-23.

बेशक, यह दो आदम हैं। यदि मसीह मृतकों में से जीवित नहीं होते, तो विश्वासियों के लिए विनाशकारी परिणामों पर विचार करने के बाद, 1 कुरिन्थियों 15:12-19 में, मैंने दो चीजों में से एक का उल्लेख किया, प्रभु ने मेरे 21 वर्षीय जीवन में मसीह में विश्वास लाने के लिए शक्तिशाली रूप से उपयोग किया। मैंने कहा, भगवान कितने ईमानदार हो सकते हैं? वह स्पष्ट रूप से कहते हैं, यदि यीशु को पुनर्जीवित नहीं किया गया होता, तो क्या प्राप्त होता? आपदा।

हम मूर्खों का झुंड होंगे। प्रेरित परमेश्वर को झूठा साबित करेंगे। हम खो जाएंगे।

जो लोग मसीह में मर गए हैं, वे खो जाएंगे। लेकिन अब श्लोक 20 में, दूसरी बात, जिसने मुझे आश्चर्य किया, वह थी त्रिएकता। बेशक, मैंने इसके बारे में पहले भी सुना था, लेकिन एक 21 वर्षीय व्यक्ति के रूप में जो मसीह के पास आया, मैंने बाइबल को, विशेष रूप से पॉल को, गहराई से पढ़ा, और मैंने उसके विचारों में हर जगह देखा।

उनके विचार के ऊपर, उनके विचार के नीचे, बीच में, त्रित्व का सिद्धांत हर जगह है। और मैंने कहा, इसे कौन बनाएगा? यह एक बाधा है। यह एक रहस्य है।

यह हमारी समझ से परे है। यह ईश्वरीय उत्पत्ति का होना चाहिए, मानवीय नहीं। ईश्वर हमेशा से इसी तरह रहा है।

खैर, 1 कुरिन्थियों 15 की आयत 20. लेकिन वास्तव में, मसीह को मरे हुएों में से उठाया गया है - जो सो गए हैं उनमें से पहला फल।

दुनिया में कैसे हो सकता है कि मसीह में विश्वास करने वाले कोरिंथियन, और पॉल उन्हें ऐसा ही मानते हैं, वैसे भी विशाल बहुमत, मसीह के पुनरुत्थान पर संदेह करते हैं? क्योंकि ग्रीको-रोमन संस्कृति से प्रभावित रोमनों के रूप में, उन्होंने देखा कि मृत्यु में शरीर के साथ क्या होता है। और उनकी भोली धारणा शरीर के पुनरुत्थान की थी, और उन्हें यह उनके दार्शनिकों से मिला, यही कारण है कि जब मार्स हिल पर पॉल ने पुनरुत्थान का उल्लेख किया, तो यूनानी दार्शनिकों ने बस उस पर हँसा। यह हास्यास्पद है।

उन्होंने सोचा कि पुनरुत्थान का मतलब बदबूदार लाशों का फिर से जीवित हो जाना है। मुझे बताया गया कि यह ज़ॉम्बी से बिलकुल अलग नहीं है। मैं निश्चित रूप से ज़ॉम्बी विशेषज्ञ नहीं हूँ।

मैं उस क्षेत्र को हमारे कुछ बड़े बेटों के लिए छोड़ दूँगा। मुझे यह बात समझ में नहीं आई, सच में। लेकिन वैसे भी, सड़ी हुई लाशें इधर-उधर घूम रही हैं? आह! और पॉल यहाँ यह दिखाने के लिए बहुत आगे जाता है कि, एक लंबी कहानी को संक्षेप में कहें तो, हमारे नश्वर शरीर और भ्रष्ट शरीर अमर और अविनाशी हो जाएँगे।

वास्तव में, वे अमर, अविनाशी, महिमावान, शक्तिशाली और आध्यात्मिक हैं, मृतकों के पुनरुत्थान में पवित्र आत्मा द्वारा शासित हैं, इसलिए वे मृतकों के पुनरुत्थान को नहीं समझते हैं, और सड़ते हुए शरीरों के पुनर्जीवित होने के बारे में उनके भोले विचारों का वास्तव में यीशु के पुनरुत्थान पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है, जिस पर वे उद्धार पाने के लिए विश्वास करते हैं। 1 कुरिन्थियों 15:3 और 4, यह सुसमाचार है, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान, और यह कि व्यक्ति को उस पर विश्वास करना चाहिए।

इसलिए, वह उनकी असंगतता को दर्शाता है। लेकिन वास्तव में, मसीह मरे हुएों में से जी उठा है, जो सो गए हैं उनमें से पहला फल है। क्योंकि जैसे एक मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, वैसे ही एक मनुष्य के द्वारा मरे हुएों का पुनरुत्थान भी हुआ है।

क्योंकि जैसे आदम में सभी मरते हैं, वैसे ही मसीह में सभी जिलाए जाएँगे। लेकिन हर एक अपने क्रम से, मसीह पहला फल है, फिर उसके आने पर वे जो मसीह के हैं। पौलुस दो मनुष्यों की तुलना और विरोधाभास करता है।

जैसे आदम ने अपने मूल पाप के माध्यम से मानवता की दुनिया में मृत्यु ला दी, मसीह, एक दूसरा आदम, मृतकों में से अपने पुनरुत्थान के माध्यम से जीवन लाता है। वह पहले जी उठा था और जब वह फिर से आएगा तो अपने लोगों को जी उठाएगा। यहाँ पौलुस ने मसीहियों का वर्णन इस प्रकार किया है, उद्धरण, वे जो मसीह के हैं, श्लोक 23।

पद 22 में पौलुस द्वारा मसीह में का प्रयोग उसी पद में आदम में के प्रयोग के विपरीत पढ़ा जाना चाहिए। इस प्रकार, मसीह में मूल स्थानिक अर्थ को दर्शाता है, जो स्थान से संबंधित है, अभिव्यक्ति का प्रयोग क्षेत्र, प्रभुत्व और राज्य को दर्शाने के लिए प्रतीकात्मक रूप से किया जाता है। आदम के क्षेत्र में रहने वाले सभी लोग मर जाते हैं।

मसीह के क्षेत्र में रहने वाले सभी लोग उसके लौटने पर जीवित हो जाएँगे। चम्पा और रोस्सर ने इस अंश में मसीह में आदम में पॉल की भावना को समान रूप से दर्शाया है। पॉल छुटकारे की कहानी का सबसे संक्षिप्त रूप प्रस्तुत कर रहा है जिसकी कल्पना की जा सकती है।

पाप की मूल समस्या मसीह द्वारा किए गए पुनरुत्थान की चरम सफलता के माध्यम से अपना अंतिम समाधान पाती है। क्योंकि जैसे आदम में सभी मरते हैं, वैसे ही मसीह में सभी जीवित किए जाएँगे। वे बुद्धिमानी से और संक्षेप में कहते हैं कि आदम में होना उस समूह का हिस्सा होना है

जो आदम में अपना प्रतिनिधि और नेता पाता है, और आदम में अपनी पहचान और नियति पाता है और जो उसने अपने लोगों के लिए लाया है।

मसीह में होना उस समूह का हिस्सा होना है जो मसीह में अपना प्रतिनिधि और नेता पाता है, जो मसीह में अपनी पहचान और नियति पाता है और जो उसने अपने लोगों के लिए लाया है। यह एक सुंदर समानता है। ओह, उनके प्रभावों में विरोधाभासी, लेकिन उनकी भूमिकाओं में, वे दो आदम और वाचा के प्रमुख हैं, अपने लोगों के संघीय प्रमुख हैं।

आदम, सभी लोग। मसीह, पॉल ने उन सभी के लिए योग्यता प्राप्त की है जो उसके हैं। आदम और मसीह में अभिव्यक्तियाँ कॉर्पोरेट एकजुटता के विचार को मजबूत करती हैं।

निम्नलिखित पद यह स्पष्ट करता है कि जीवित किए जाने से, एक उद्धारण, पॉल के मन में पुनरुत्थान है, क्योंकि जो उसके हैं वे जीवित किए जाएंगे, अर्थात् जब वह आएगा, तो जी उठेंगे, उद्धारण समाप्त करें। मैं 1 कुरिन्थियों 15 के साथ और भी बहुत कुछ कर सकता था, लेकिन हम पॉल के विषयों और विचारों और यहाँ तक कि व्यवस्थित धर्मशास्त्र में उनके योगदान को जल्द ही आने वाले भविष्य के व्याख्यान में प्राप्त करना चाहते हैं। लेकिन मैं 1 कुरिन्थियों 15 में अंतिम पद का विरोध नहीं कर सकता: इसलिए, मेरे प्यारे भाइयों, दृढ़ रहो, अविचल रहो, प्रभु के काम में हमेशा बढ़ते रहो, यह जानते हुए कि प्रभु में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है।

यह उन कई जगहों में से एक है जहाँ प्रेरित मसीहियों के कार्यों को प्रभु में होने के रूप में व्यक्त करता है, जिसका अर्थ है मसीह के लिए। यहाँ जिस श्रम का उल्लेख किया गया है वह मसीही श्रम है, मसीह के लिए की गई सेवा। क्योंकि यीशु मृतकों में से जीवित है, इसलिए पौलुस कुरिन्थियों को अडिग और स्थिर रहने के लिए प्रोत्साहित करता है।

वे परिस्थितियों की परवाह किए बिना, दृढ़ रह सकते हैं, और इस लंगर, क्रूस पर चढ़ाए गए लंगर को पाकर, जीवित रह सकते हैं। परिणामस्वरूप, वे प्रभु के कार्य में फलदायी हो सकते हैं, यह जानते हुए कि यह व्यर्थ नहीं जाएगा। मसीह, ईसाई श्रम के बारे में बोलते हुए, बैरेट, सीके बैरेट सारगर्भित हैं, उद्धारण, चूंकि यह प्रभु में किया जाता है, इसलिए यह उससे अधिक नष्ट नहीं हो सकता, उद्धारण समाप्त करें।

बैरेट की कुरिन्थियों को लिखे गए पहले पत्र पर उपयोगी टिप्पणी। और मानो या न मानो, मैं 2 कुरिन्थियों पर हूँ। 2 कुरिन्थियों 1:3-7.

हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है। वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है; ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शान्ति दे सकें, जो किसी प्रकार के क्लेश में हों। क्योंकि जैसे हम मसीह के दुखों में सहभागी होते हैं, वैसे ही मसीह के द्वारा शान्ति में भी सहभागी होते हैं। यदि हम क्लेश पाते हैं, तो यह तुम्हारी शान्ति और उद्धार के लिये है।

यदि हमें सांत्वना मिलती है, तो यह आपकी सांत्वना के लिए है, जिसे आप तब अनुभव करते हैं जब आप धैर्यपूर्वक उन्हीं कष्टों को सहते हैं जो हम सहते हैं। हमारी आशा आपके लिए अटल है,

क्योंकि हम जानते हैं कि जैसे आप हमारे कष्टों में भागीदार हैं, वैसे ही आप हमारे सांत्वना में भी भागीदार होंगे। पौलुस प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की स्तुति करके शुरू करता है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रेरित ने उसे दया का पिता और सभी प्रकार की सांत्वना का परमेश्वर बताया है। पद 3. ये शब्द निम्नलिखित शिक्षा का आधार बनते हैं। दयालु और सांत्वना देने वाला पिता विश्वासियों को उनके दुख में सांत्वना देता है ताकि वे दूसरों को उनके दुख में सांत्वना देने के लिए तैयार हो सकें।

यह परमेश्वर की सांत्वना है जिसे विश्वासी दूसरों तक पहुँचाते हैं। पद 4. अब तक, मसीह का केवल परमेश्वर के पुत्र के रूप में उल्लेख किया गया है। अब, चीजें बदल गई हैं।

पौलुस मसीहियों के प्रेम को मसीही विज्ञान के दृष्टिकोण से देखता है। जैसे हम मसीह के दुखों में बहुतायत से भाग लेते हैं, वैसे ही मसीह के द्वारा हम सांत्वना में भी बहुतायत से भाग लेते हैं। पद 5. यह बताना महत्वपूर्ण है कि इस पद का क्या अर्थ नहीं है।

बेशक, विश्वासी मसीह की मुक्तिदायी पीड़ा में भाग नहीं लेते। यह बिलकुल अनोखी बात है। केवल मध्यस्थ ही प्रायश्चित्त करता है।

हम प्रायश्चित्त नहीं करते। साथ ही, वर्तमान दुखों और भविष्य के आराम का संयोजन, हालांकि बाहर नहीं रखा गया है, मुख्य रूप से दृष्टि में नहीं है। इसके बजाय, पौलुस के मन में वर्तमान कष्टों और वर्तमान आराम का संयोजन है।

एक सामान्य पैटर्न वर्तमान कष्ट और भविष्य का आराम है, लेकिन यहाँ, उसका मुख्य जोर वर्तमान कष्ट और वर्तमान आराम पर है। यदि आप चाहें, तो भविष्य के आराम को वर्तमान में लाना। अर्थात्, मसीह के साथ उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान में एकता में न केवल वर्तमान कष्ट और भविष्य की महिमा शामिल है, बल्कि पिता की सहायता और प्रोत्साहन के रूप में अनुभव की गई वर्तमान पीड़ा और वर्तमान महिमा भी शामिल है।

और यह सहायता और प्रोत्साहन बाँटा जाना चाहिए। अगर हम पीड़ित हैं, तो यह आपके आराम और उद्धार के लिए है। और अगर हमें सांत्वना मिलती है, तो यह आपके आराम के लिए है, जिसे आप तब अनुभव करते हैं जब आप धैर्यपूर्वक उन्हीं कष्टों को सहते हैं जो हम सहते हैं।

जिस तरह प्रभु यीशु मरे और जी उठे, उसी तरह हम विश्वासियों के बारे में आश्वस्त हो सकते हैं कि वे अब उनके दुख और सांत्वना में भागीदार होंगे। आपके लिए हमारी आशा अटल है, क्योंकि हम जानते हैं कि जैसे आप हमारे दुखों में भागीदार हैं, वैसे ही आप हमारे सांत्वना में भी भागीदार होंगे। फिलिप एडगकम्बे ह्यूजेस ने 2 कुरिन्थियों और इब्रानियों पर टिप्पणियाँ कीं और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर थोड़ा काम किया।

और वहाँ ध्वनि है; वह असामान्य है, वह था, और वह अब प्रभु के साथ है, न्यू टेस्टामेंट के विद्वानों के अनुसार। वास्तव में, उसे अनुशासन में बांधना भी कठिन है क्योंकि वह न्यू टेस्टामेंट और

बाइबिल की व्याख्या के इतिहास से अवगत था। वाह! और साथ ही, वह एक बहुत ही सक्षम धर्मशास्त्री था।

इसलिए, उनकी टिप्पणियों में व्याख्या का इतिहास शामिल है। आलोचनात्मक विद्वत्ता के संदर्भ में, गंभीर व्याख्या ज्ञानोदय से शुरू हुई और पिछली सामग्री कम से कम सामान्य रूप से बेकार है। ह्यूजेस के लिए ऐसा नहीं है।

हम पिताओं से, मध्यकालीन लोगों से और निश्चित रूप से सुधारकों, जॉन एडवर्ड्स और अन्य लोगों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। ह्यूजेस ने ईसाईयों के लिए बहुत ही शानदार ढंग से सारांश दिया है; हालाँकि, जैसा कि पॉल ने अन्यत्र समझाया है, मसीह के दुखों की संगति जैसी कोई चीज़ है, फिलिप्पियों 3.10। यह दुख में मसीह के साथ साझेदारी या भागीदारी है। लेकिन मसीह, यह याद रखें, अब अपमान में पीड़ित नहीं है, क्योंकि वह अब महिमा में ऊंचा हो गया है।

यदि हमें दीनता के मसीह के दुखों में सहभागी होने के लिए बुलाया जाता है, तो यह महिमा का मसीह है जो हमें, एक और एक ही मसीह को, भरपूर सांत्वना प्रदान करता है। हालाँकि, करीबी उद्घरण, वर्तमान दुख और सांत्वना पर जोर देता है, लेकिन यह अंश भविष्य के सांत्वना की आशा से रहित नहीं है, क्योंकि यह परमेश्वर की ओर ध्यान आकर्षित करता है जो मृतकों को जीवित करता है। यह 2 कुरिन्थियों 1:9 से एक उद्घरण है। 2 कुरिन्थियों 1:17-22, मैंने पहले इस अंश का उल्लेख किया था और मेरे पास यहाँ बहुत कुछ नहीं है, लेकिन यह आकर्षक है क्योंकि यह पॉल को रक्षात्मक मोड़ में चित्रित करता है, अपनी ईमानदारी के बारे में हमलों को रोकता है।

1 कुरिन्थियों 1:15, क्योंकि मुझे इस बात का भरोसा था, इसलिए मैं पहले तुम्हारे पास आना चाहता था ताकि तुम अनुग्रह का दूसरा अनुभव कर सको। मैं मकिदुनिया जाते समय तुम्हारे पास आना चाहता था और मकिदुनिया से वापस आकर तुमसे मिलना चाहता था और तुम मुझे यहूदिया के रास्ते पर विदा करो। जब मैं ऐसा करना चाहता था तो क्या मैं झिझक रहा था? क्या मैं शरीर के अनुसार अपनी योजनाएँ बनाता हूँ, हाँ, हाँ और नहीं, नहीं कहने के लिए तैयार रहता हूँ? यही बात उसके दुश्मन भी कह रहे हैं क्योंकि पौलुस ने अपनी यात्रा का कार्यक्रम बदल दिया।

और वे कह रहे हैं, देखो, वह अपना कार्यक्रम बदलता है और यही बात वह अपनी शिक्षा के साथ भी करता है। वह बस सब कुछ बदल देता है। वह अपने श्रोताओं के कानों को गुदगुदाता है।

वह एक झूठा प्रेरित है। खैर, क्या पॉल आलोचना स्वीकार कर सकता है? हाँ। क्या उसे आलोचनात्मक आलोचना पसंद है? नहीं।

क्या यह उसे रात भर जगाए रखेगा? ऐसा नहीं लगता। क्या वह सुसमाचार की आलोचना को बर्दाश्त कर सकता है? बेहतर है कि आप इस पर विश्वास न करें। और वह लड़ाई के लिए बाहर आता है।

और निश्चय परमेश्वर विश्वासयोग्य है, 1:18, हमारा वचन तुम्हारे लिये हाँ और नहीं दोनों नहीं रहा। क्योंकि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह, जिसका प्रचार हम तुम्हारे बीच में करते हैं, अर्थात्

सिलवानुस और तीमुथियुस और मैं, उसके विषय में हां और नहीं दोनों नहीं हैं, परन्तु उसमें सदा हां है, क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएं हैं, सब उसी में हां पाई जाती हैं।

इसलिए हम उसके द्वारा महिमा के लिए, अर्थात् परमेश्वर की महिमा के लिए आमीन कहते हैं। और यह परमेश्वर ही है जिसने हमें तुम्हारे साथ मसीह में स्थापित किया है और हमें अभिषेक किया है, जिसने हम पर अपनी मुहर भी लगाई है, और जिसने हमें अपने हृदयों में अपनी आत्मा दी है, एक गारंटी के रूप में और दुश्मनों द्वारा सेवकाई और संदेश दोनों में ढिलाई का आरोप लगाया है।

जब वह योजना के अनुसार कुरिन्थ नहीं लौटता, तो पॉल दोनों का बचाव करता है। वह बताता है कि उसने कुरिन्थ जाने की अपनी योजना बदल दी ताकि उन्हें बचाया जा सके, पद 23। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वह यह कहता है कि उसका संदेश हमेशा स्थिर रहा है और उसमें कोई बदलाव नहीं आया है।

उनका संदेश, उनकी योजनाएँ बदल सकती हैं, उनका कार्यक्रम बदल सकता है, लेकिन संदेश नहीं। नहीं। यह पूरी तरह से ठोस और अपरिवर्तनीय है।

विधियाँ, मैं सभी लोगों के लिए सब कुछ हूँ, और हर तरह से, मैं कुछ लोगों को बचा सकता हूँ, 1 कुरिन्थियों 9. विधियाँ परिवर्तनशील हैं। संदेश, अपरिवर्तनीय। क्योंकि यह उसे जी उठे मसीह द्वारा दिया गया था, गलातियों 1, उसने इसे नहीं बनाया।

ऐसा इसलिए है क्योंकि उसका संदेश मसीह और सुसमाचार पर केंद्रित है, पद 19 से 20। इन दोनों का उपयोग उसके लिए सहायक है। परमेश्वर अपने वादे करता है और उन्हें मसीह में पूरा करता है, अर्थात् अपने पुत्र यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य के माध्यम से।

स्थिरता के कारण, मसीह सुसमाचार में लाता है, यह उसके द्वारा या उसके माध्यम से है कि हम परमेश्वर को उसकी महिमा के लिए अपना आमीन कहते हैं, पद 20. 19, उसमें हमारा आमीन हमेशा हाँ होता है, हाँ और नहीं नहीं, अस्थिर नहीं, और परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाएँ उसमें अपनी हाँ पाती हैं, दोनों को हमने उसके माध्यम से समझाया है। साधन या साधन दिखाना।

पौलुस एक अस्थिर व्यक्ति नहीं है। इसके विपरीत, उसके और सभी मसीहियों के जीवन में एक जबरदस्त स्थिरता शक्ति है, आयत 21 से 23। पवित्र त्रित्व विश्वासियों को स्थिर बनाता है।

पिता हमें पवित्र आत्मा की सेवकाई के माध्यम से स्थिर करता है। चार बार, पौलुस आत्मा के बारे में बात करता है। पिता हमें आत्मा से अभिषिक्त करता है, हमें आत्मा से मुहर लगाता है, हमें अपने हृदयों में अपनी आत्मा देता है, और हमें हमारी अंतिम विरासत की अग्रिम राशि या गारंटी के रूप में आत्मा देता है।

परमेश्वर द्वारा हमें अपने हृदय में आत्मा देना, मसीह के साथ एकता के लिए एक सह-संबंधी, एक अविभाज्य साथी के रूप में हमारे भीतर निवास करने के बारे में बात करने का एक और तरीका

है। पौलुस लिखता है कि यह परमेश्वर है जो हमें मसीह में तुम्हारे साथ स्थापित करता है, पद 21। इन छह पदों में मसीह का तीसरा संदर्भ है।

इस मामले में, "यह आयत उन विश्वासियों की स्थिति को व्यक्त करती है, जिन्हें किसी तरह से मसीह द्वारा परिभाषित या मसीह से संबंधित होने की पुष्टि की गई है।" कॉन्स्टेंटाइन कैंपबेल का उत्कृष्ट कार्य, *पॉल और मसीह के साथ एकता*। 2 कुरिन्थियों 5:16 से 21।

मुझे उम्मीद है कि मैंने उन स्थिर प्रभावों के साथ पर्याप्त काम किया है। शायद मैं बस थोड़ा और करूँ। 20वें पद में परमेश्वर के वादों, खास तौर पर सुसमाचार, के स्थिर होने के बारे में कहने के बाद, पौलुस 21वें पद में कहता है कि परमेश्वर, त्रिदेव, खास तौर पर पिता, हमें स्थिर करते हैं।

वह यही करता है, न केवल अपने वचन में बोलकर बल्कि अपने कार्य द्वारा। विशेष रूप से, वह हमें मसीह में आपके साथ स्थापित करता है। यहाँ शब्दों का खेल हो सकता है क्योंकि क्रिस्टोस का अर्थ है अभिषिक्त व्यक्ति, और उसके अगले शब्द हैं, और उसने हमें अभिषिक्त किया है।

परमेश्वर ने मसीह में विश्वासियों को पवित्र आत्मा देकर स्थापित किया है। त्रिदेव हैं। पिता अपने पुत्र के साथ एकता में लोगों को स्थिर करता है।

अर्थात्, विश्वासियों को मसीह के लोग कहकर उन्हें आत्मा प्रदान करना। चार तरीकों से, वह उन्हें आत्मा प्रदान करने की बात करता है। उसने हमें अभिषिक्त किया है।

उसने पिन्तेकुस्त के दिन एक बार और हमेशा के लिए अपनी आत्मा को कलीसिया पर उंडेल दिया। और तब से, विश्वासियों को, जब वे परिवर्तित होते हैं, आत्मा प्राप्त होती है। उसने हम पर अपनी मुहर भी लगा दी है।

हालाँकि यह बहुत कम लोगों को पता है, लेकिन तीन अंशों में, पौलुस पवित्र आत्मा को परमेश्वर की मुहर के रूप में बताता है। हमने इसे पहले ही 1 कुरिन्थियों, क्षमा करें, इफिसियों 4.30 में देखा है। शराब से मतवाले मत बनो, बल्कि आत्मा से भर जाओ। ओह, यह गलत है।

मुझे वहाँ जाना होगा, मुझे खेद है। मैं यहाँ थोड़ा उलझन में हूँ; इसके लिए खेद है। तीन स्थानों पर, पॉल पवित्र आत्मा की मुहर के बारे में बात करता है।

पवित्र आत्मा परमेश्वर की मुहर है। इफिसियों 1:13 और 14. उसमें, आप भी वादा किए गए पवित्र आत्मा के साथ मुहरबंद हैं।

मसीह में, पिता हमें मुहर लगाता है। यह दिव्य निष्क्रियता है। मसीह में, आप भी पिता द्वारा मुहरबंद किए गए थे, जो वादा किया गया पवित्र आत्मा है।

त्रित्व है। पिता मुहर लगाने वाला है, आत्मा मुहर है, और परमेश्वर मसीह में विश्वासियों को मुहर लगाता है। इसी तरह, हाँ, यह इफिसियों 4:30 है। मुझे पहले लिखना था, लेकिन गलत उद्धरण के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।

और परमेश्वर की पवित्र आत्मा को दुखी मत करो, जिसके द्वारा, जिसके द्वारा यह होना चाहिए, जैसा कि मैंने पहले कहा था। हम छुटकारे के दिन के लिए मुहरबंद हैं। वहाँ, मुहरबंद होने का मुख्य अर्थ सामने आता है।

यह संरक्षण है। परमेश्वर हमें अब आत्मा के साथ मुहर लगाता है, हमारे अंतिम उद्धार की गारंटी देता है। वह हमें मुहर लगाता है, हमें अपना मानता है, और हमें मुक्ति के अंतिम दिन तक या उसके लिए हमारी और हमारे उद्धार की रक्षा करने के लिए ईश्वरत्व का एक व्यक्ति देता है।

इसलिए, पौलुस का संदेश अटल है क्योंकि परमेश्वर का वचन ठोस है, 2 कुरिन्थियों 1:19। और पौलुस और अन्य सभी विश्वासी, वास्तव में, त्रिएकत्व के कारण ठोस, स्थिर भी हैं। केवल बोलना ही नहीं 1:19, बल्कि कार्य करना, विशेष रूप से हमें आत्मा देना। परमेश्वर ने हमें अभिषिक्त किया और हमें आत्मा से मुहरबंद किया।

इसमें आत्मा नहीं कहा गया है, लेकिन यह निहित है। और हमें अपने हृदय में अपनी आत्मा दी है। और चौथा एक अग्रिम भुगतान, एक गारंटी, एक... मुझे आज चीजें याद रखने में समस्या हो रही है।

बेशक, मेरे मामले में इसका उम्र से कोई लेना-देना नहीं है। मैं इस शब्द को अपने नाम जितना ही जानता हूँ। लेकिन यह है? अरेबोन, बेशक।

अरामी ऋण शब्द, अरबोन। अग्रिम भुगतान। जमा।

अंतिम छुटकारे की प्रतीक्षा में। जब परमेश्वर हमें विरासत का बाकी हिस्सा, या वादा देगा, जो कि... अगर मैं एक समकालीन उदाहरण का उपयोग कर सकता हूँ, तो बयाना राशि जो आपने घर पर रखी है। पवित्र आत्मा के साथ परमेश्वर द्वारा हमें आशीर्वाद देने के संदर्भ के लिए।

अपनी स्थिरता को दर्शाएँ, जो परमेश्वर द्वारा नियुक्त की गई है और उसके लोगों को दी गई है। 2 कुरिन्थियों 1:17-22. 2 कुरिन्थियों 5:16-21.

मैं बूढ़ा नहीं हो रहा हूँ। यह सब एक मिथक है, मैं आपको बता रहा हूँ। 2 कुरिन्थियों 5, 16-21.

इसलिए अब से हम किसी को शरीर के अनुसार नहीं समझेंगे। यद्यपि हमने एक बार मसीह को भी शरीर के अनुसार समझा था, फिर भी अब हम उसे शरीर के अनुसार नहीं समझेंगे। इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है।

पुराना बीत चुका है, और देखो, नया आ गया है। यह सब परमेश्वर की ओर से है, जिसने मसीह के द्वारा हमें अपने साथ मेलमिलाप कराया और हमें मेलमिलाप की सेवकाई सौंपी है। अर्थात्, मसीह में, परमेश्वर ने संसार को अपने साथ मेलमिलाप कराया।

उनके अपराधों को उनके विरुद्ध न गिना जाए और उन्हें मेलमिलाप का संदेश सौंप दिया जाए। इसलिए, हम मसीह के राजदूत हैं। परमेश्वर हमारे द्वारा अपनी अपील कर रहा है, और हम मसीह की ओर से आपसे विनती करते हैं कि परमेश्वर के साथ मेलमिलाप कर लो।

हमारे लिए, ताकि उसमें... हमारे लिए, परमेश्वर ने उसे पाप बना दिया, जो पाप से अनजान था, ताकि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ। पौलुस विश्वासियों की स्थिति में बदलाव की बात करता है। यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है।

मसीह में वह नया क्षेत्र है जिसमें मसीही खुद को पाते हैं। यह मसीह का क्षेत्र है, उसका क्षेत्र है। उसके क्षेत्र में होने का मतलब है परमेश्वर की नई सृष्टि का हिस्सा होना।

प्रेरित इस स्थिति का वर्णन करना जारी रखते हैं। वे कहते हैं, पुराना बीत चुका है। देखो, नया आ गया है।

पद 17 में पौलुस मसीह में मेल-मिलाप को एक साथ लाता है। पद 19 में वह मसीह में को, पद 18 में मसीह के द्वारा के समानान्तर प्रस्तुत करता है। यह इस प्रकार है: 18, परमेश्वर ने मसीह के द्वारा हमें अपने साथ मेल-मिलाप करा दिया।

19 अर्थात्, मसीह में, परमेश्वर संसार का अपने साथ मेल-मिलाप कर रहा था। मसीह के द्वारा, मसीह में। 2 कुरिन्थियों 5 के 18 और 19। फिर, मसीह में, पद 19 में साधनात्मक रूप से प्रयोग किया गया है।

परमेश्वर मसीह के व्यक्तित्व और कार्य के माध्यम से संसार और अपने बीच शांति स्थापित कर रहा था। पौलुस ने उसमें और औचित्य को भी जोड़ा है। हमारे लिए, पद 21 में, उसने, परमेश्वर ने, उसे पाप बना दिया, जो पाप से अनभिज्ञ था, ताकि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।

हालाँकि मसीह भाषा के सभी प्रयोग मसीह और विश्वासियों के बीच संबंध को व्यक्त करते हैं, लेकिन अधिकांश प्रयोग सीधे मसीह के साथ एकता को इंगित नहीं करते हैं। लेकिन यहाँ ऐसा लगता है। और मैं कॉन्स्टेंटाइन कैम्बेल को उद्धृत कर रहा हूँ, जिन्होंने किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक मुझे सिखाया कि इसका क्या अर्थ है, पॉल में मसीह के साथ एकता का क्या अर्थ है।

"यह वाक्यांश मसीह के साथ एकता का संकेत दे सकता है। मसीह की धार्मिकता में हिस्सा लेने से विश्वासी धार्मिक बन जाते हैं। वह पद 21 का उल्लेख कर रहा है।

इस पाठ की ताकत इस श्लोक में स्पष्ट समरूपता से आती है जिसमें मसीह हमारे लिए पाप बन जाता है और विश्वासी उसके द्वारा धार्मिकता बन जाते हैं। चूँकि मसीह, जो पाप नहीं जानता था, पाप बना दिया गया था, उद्धरण चिह्नों में, इस प्रकार पापियों की दुर्दशा में भाग लेने के लिए। इसलिए, पापियों को उसकी धार्मिक स्थिति में भाग लेने के द्वारा धार्मिक बनाया जाता है। श्लोक का आंतरिक तर्क ही अंततः निर्णायक होना चाहिए। उसमें मसीह के साथ एकता का संकेत मिलता है।"

हमारे अगले व्याख्यान में, हम पॉलिन पत्रों में मसीह के साथ एकता का अध्ययन करना जारी रखेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या 13 है, पॉल, 1 और 2 कुरिन्थियों में मसीह के साथ एकता के लिए आधार।